Patna University

Patna University, the seventh oldest university in the Indian subcontinent and the first in Bihar, was founded by an Act of legislature on 1st October 1917. The University was established as an examining body and conducted examinations from matriculation to post graduation. Its jurisdiction mapped Bihar, Orissa and Nepal and for forty years since its inception Patna University was the arbiter of the academic destiny of these territories. The Patna University Act, 1951, which received the assent of the Governor on 6th July 1951, was passed with a view to establish a teaching and residential university at Patna. The Act defines that the purpose and powers of the university shall be to provide instruction to such branches of learning as the University may think fit including professional studies and technology, and for research and for the advancement and dissemination of knowledge. It remained the only university in Bihar until January 1952 and continued to be the examining body of educational institutions in Nepal until the founding of Tribhuvan University in Kathmandu. With the founding of Utkal University this university ceased to be the examining body for institutions in Orissa.

The history of Patna University parallels the history of the educational, cultural, political and economic growth of modern Bihar. It is the only teaching cum residential university in the state with a truly national character that transcends linguistic, cultural, political and other denominational boundaries. The outstanding personalities who have led India's Freedom Struggle and have occupied or are now occupying coveted academic, administrative, judicial and political positions along with its reputed teachers and eager students have largely contributed towards its very rich academic heritage. Bihar has been an ancient seat of learning. Within its territory there were famous universities such as Nalanda and Vikramshila where students, teachers and scholars from various parts of Asia used to reside and learn.

After independence, higher education being a major resource for economic progress and social transformation had to be popularized for the growth and development of the state. At that time it was felt that Patna University with its sound infrastructure ought to concentrate on scholarship teaching and research and divest itself of the responsibility of conducting various state level examinations.

Today, Patna University has thirty post-graduate departments in the faculties of Humanities, Social Science, Science, Education, Commerce, Law and ten constituent colleges apart from Faculty of Medicine that is administered by the State Government. Most of the post-graduate departments are located in buildings that are a part of a distinguished architectural heritage of the state. Constituent colleges of Patna University such as Patna College, Science College, Magadh Mahila College, Patna Women's College, B.N. College and Vanijya Mahavidyalaya also run post-graduate departments in select subjects under their respective college administrations. These courses fulfill the increased public demand for access to post-graduate study.

The University is in the process of revitalizing its potential for excellence to provide students, researchers and teachers opportunities to excel in their disciplines and establish partnerships with Indian and off-shore universities to enhance scholarship and sharing of technology. The UGC Academic Staff College through orientation and refresher courses, seminars and workshops reminds the academic community of the need to update knowledge and refurbish teaching and communication skills.

Located centrally, at the hub of the university campus, is the Central Library that meets the needs of students, teachers and research scholars. The computerized library is connected to INFLIBNET. Users can access four hundred thousand books, eighty-seven periodicals, fifty thousand back issues of journals and more than five thousand rare manuscripts. In an age of information and communication technology the frontiers of time and space are ever expanding and the University is in the process of equipping teachers and students with contemporary techniques, skills and knowledge to face various professional challenges. Of the ten constituent colleges, three are exclusively meant for women students while in the other coeducational institutions including post graduate departments the number of women students is substantial. Patna University has always been sensitive to the needs of the socially and economically disadvantaged and students with special needs.For co-curricular participation and holistic development of a student, agencies such as the NSS, NCC, Sports and Cultural Activities Boards and numerous learned Societies encourage these talents. Students of Patna University have performed with great distinction at university, state and national levels.

Department of Posts is pleased to issue a Commemorative Postage Stamp on Patna University on its centenary.

Credits:

Text	:	Based on the material received from proponent
Stamp/ FDC/Brochure	:	Sh. Brahmprakash
Cancellation Cachet	:	Smt. Nenu Gupta

भारतीय डाक विभाग

Department of Posts

India
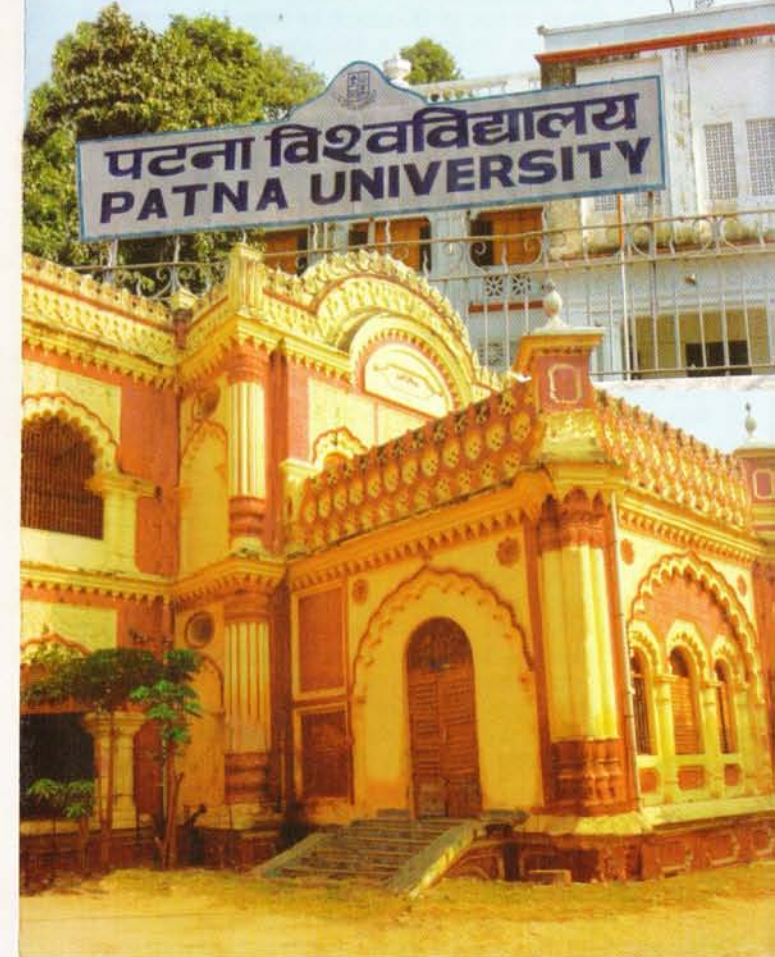
वर्ष YEARS

पटना विश्वविद्यालय

Patna University

1917-2017

विवरणिका BROCHURE

पटना विश्वविद्यालय

पटना विश्वविद्यालय की स्थापना बिहार राज्य में भारतीय उपमहाद्वीप के सातवें सबसे पुराने विश्वविद्यालय के रूप में 1 अक्टूबर, 1917 ई. को विधायिका द्वारा पारित एक एक्ट के द्वारा हुई थी। प्रारंभ में यह परीक्षा लेने वाली संस्था के रूप में स्थापित थी जो मैट्रिकुलेशन से स्नातकोत्तर तक की परीक्षाओं का संचालन करती थी। लगभग 40 वर्षों तक पटना विश्वविद्यालय का फैलाव बिहार और ओडिशा (तत्कालीन उड़ीसा) तथा नेपाल राज्यों की सीमा तक था। पटना विश्वविद्यालय इनकी शैक्षणिक नीतियों का निर्धारण करता था। 06 जुलाई, 1951 ई. को राज्यपाल की सहमति से पटना विश्वविद्यालय एक्ट 1951 पारित हुआ जिसके अंतर्गत पटना विश्वविद्यालय को शिक्षण–सह–आवासीय विश्वविद्यालय के रूप में स्थापित किया गया। इस एक्ट के द्वारा पटना विश्वविद्यालय के उद्देश्य और कार्यों को परिभाषित किया गया। इसमें स्पष्ट किया गया कि इस विश्वविद्यालय का उद्देश्य व्यावसायिक एवं तकनीकी अध्ययन सहित सभी विधाओं में वैसी शिक्षा प्रदान करना है जो विश्वविद्यालय की दृष्टि में ज्ञान के विकास और प्रसार में सहायक हो। जनवरी, 1952 ई. तक यह बिहार का एक मात्र विश्वविद्यालय था और काठमांडू विश्वविद्यालय की स्थापना होने तक यह नेपाल के सभी उच्च संस्थाओं की परीक्षा लेता रहा। उत्कल विश्वविद्यालय की स्थापना होते ही ओडिशा की सभी उच्च शिक्षण संस्थाएं पटना विश्वविद्यालय की सीमा से बाहर हो गई।

वस्तुतः पटना विश्वविद्यालय का इतिहास और आधुनिक बिहार राज्य का शैक्षणिक, सांस्कृतिक, राजनीतिक और आर्थिक विकास का इतिहास समानांतर है। यह न सिर्फ राज्य का एक मात्र शिक्षण–सह–आवासीय विश्वविद्यालय है वरन सही अर्थों में राष्ट्रीय महत्व का विश्वविद्यालय है जहां भाषा, संस्कृति, राजनीति और अन्य सीमाएं स्वतः समाप्त हो जाती हैं और भारतीय चरित्र परिलक्षित होता है। इसकी गौरवशाली शैक्षणिक विरासत के निर्माण में इसके शिक्षक और छात्रों का अभूत पूर्व योगदान है। इसके अनेक पूर्ववर्ती छात्रों ने न सिर्फ स्वतंत्रता आन्दोलन में सक्रिय भाग लिया बल्कि वे आज भी देश की शैक्षणिक, प्रशासकीय, न्यायिक सेवा और राजनीति के क्षेत्र में सम्माननीय पदों पर आसीन हैं। प्राचीनकाल से बिहार शिक्षण का सर्वाधिक महत्वपूर्ण केंद्र रहा है। वर्तमान बिहार की सीमा के अंतर्गत ही प्राचीन नालंदा और विक्रमशिला विश्वविद्यालय अवस्थित थे जहां एशिया के विभिन्न भागों से छात्र, शिक्षक और विद्वान अध्ययन हेतु आते थे।

स्वतंत्रता के बाद आर्थिक विकास, सामाजिक परिवर्तन तथा बहुआयामी विकास के लिए उच्च शिक्षा को एक संसाधन के रूप में मान्यता दी गई है। इसी परिप्रेक्ष्य में यह महसूस किया गया कि पटना विश्वविद्यालय अपनी संरचनात्मक सुविधाओं के आधार पर शिक्षण और शोध कार्यों पर गहनता से आगे बढ़ता रहे और राज्य स्तरीय सभी परीक्षाओं के संचालन और परिणाम की जिम्मेवारी से अपने को मुक्त कर ले।

सम्प्रति पटना विश्वविद्यालय के अंतर्गत 30 स्नातकोत्तर विभाग हैं जो मानविकी, सामाजिक विज्ञान, विज्ञान, शिक्षा, वाणिज्य एवं विधि संकायों के अंतर्गत अवस्थित हैं। इसके अतिरिक्त चिकित्सा संकाय भी है जिसके महाविद्यालय राज्य सरकार द्वारा प्रशासित होते हैं। इसके अंतर्गत 10 अंगीभूत महाविद्यालय भी हैं। अधिकतर स्नातकोत्तर विभाग ऐसे भवनों में स्थित हैं, जो राज्य के विशिष्ट वास्तुशिल्पीय धरोहर के भाग हैं। पटना कॉलेज, साईंस कॉलेज, मगध महिला कॉलेज, पटना महिला कॉलेज, बी. एन कॉलेज तथा वाणिज्य महाविद्यालय जैसे कॉलेज पटना विश्वविद्यालय के घटक कॉलेज हैं, जो अपने–अपने कॉलेज प्रशासनों के तहत चुनिंदा विषयों में स्नातकोत्तर विभाग भी चलाते हैं। ये पाठ्यक्रम स्नातकोत्तर अध्ययन हेतु बढ़ती हुई सार्वजनिक मांग को पूरा करते हैं।

पटना विश्वविद्यालय अपनी अपार संभावनाओं को पुनः विकसित करने के प्रति पूर्णतः जागरुक है और अपने विद्यार्थियों, शोध छात्रों और शिक्षकों को वे सभी सुविधाएं देने के लिए प्रतिबद्ध है जिससे वे संबंधित विषयों में उच्चता और दक्षता प्राप्त कर सकें तथा भारतीय और विदेशी विश्वविद्यालयों के साथ अपनी विद्वता, कार्य कुशलता और तकनीकी ज्ञान का आदान–प्रदान कर सकें। पटना विश्वविद्यालय में अवस्थित यू.जी.सी. एकेडमीक स्टाफ कॉलेज ओरिएंटेशन एवं रिफ्रेशर पाठ्यक्रमों, सेमिनारों एवं कार्यशालाओं का आयोजन करता रहता है ताकि शिक्षकों के ज्ञान, शिक्षण दक्षता और संचार कौशल में नवीनता आए और कुल मिला कर वे नवीनतम गुणों से युक्त शिक्षक बन सकें।

विश्वविद्यालय के प्रांगण में अवस्थित केंद्रीय पुस्तकालय छात्रों, शिक्षकों और शोधार्थियों की जरूरतों को पूरा करता है। कंप्यूटरीकृत पुस्तकालय इनफ्लिबनेट से जुड़ा है। पाठक चार लाख भारतीय पुस्तकों, सत्तासी पत्रिकाओं, पत्रिकाओं के पचास हजार पुराने अंकों तथा पचास हजार से अधिक दुर्लभ पांडुलिपियों का उपयोग कर सकते हैं। वर्तमान सूचना तथा संचार तकनीकी के युग में समय और क्षेत्र की सीमाओं का विस्तार हो रहा है तथा विश्वविद्यालय तदनुरूप सतत प्रयत्नशील एवं अग्रसर है ताकि इसके शिक्षक और छात्र ज्ञान और विज्ञान की नवीन तकनीकों और कौशलों से लैस हो कर व्यावसायिक चुनौतियों का सामना कर सकें। पटना विश्वविद्यालय के दस अंगीभूत महाविद्यालयों में तीन महाविद्यालय सिर्फ महिलाओं के लिए हैं, जबकि अन्य सभी महाविद्यालयों में सह–शिक्षा की व्यवस्था है। पटना विश्वविद्यालय में छात्राओं की पर्याप्त संख्या है। पटना विश्वविद्यालय सामाजिक और आर्थिक रूप से कमजोर वर्गों के छात्रों के प्रति सदैव संवेदनशील रहा है। विद्यार्थियों की पाठ्येतर कार्यक्रमों में सहभागिता और उनके समग्र विकास के लिए राष्ट्रीय सेवा योजना(एनएसएस), राष्ट्रीय कैडेट कोर(एनसीसी), खेल–कूद एवं सांस्कृतिक गतिविधियों से संबंधित बोर्ड जैसी एजेंसियां उनकी प्रतिभा को प्रोत्साहित करती हैं। अनेक विद्यार्थियों ने अपनी प्रतिभा से विश्वविद्यालय, राज्य एवं राष्ट्रीय स्तर पर अपनी पहचान बनाई है।

डाक विभाग पटना विश्वविद्यालय के सौ वर्ष पूरे होने के उपलक्ष्य में स्मारक डाक टिकट जारी करते हुए प्रसन्नता का अनुभव करता है।

आभारः–

मूलपाठ : प्रस्तावक द्वारा उपलब्ध कराई गइ सामग्री पर आधारित

डाक टिकट / प्रथम दिवस आवरण / विवरणिका : श्री ब्रह्मप्रकाश

विरूपण : श्रीमती नीनू गुप्ता

भारतीय डाक विभाग
DEPARTMENT OF POSTS
INDIA

तकनीकी आंकड़े
TECHNICAL DATA

मूल्यवर्ग	: 500 पैसा
Denomination	: 500 p
मुद्रित डाक–टिकटें	: 6.026 लाख
Stamps Printed	: 6.026 lakh
मुद्रण प्रक्रिया	: वेट ऑफसेट
Printing Process	: Wet Offset
मुद्रक	: प्रतिभूति मुद्रणालय, हैदराबाद
Printer	: Security Printing Press, Hyderabad

The philatelic items are available for sale at

http://www.epostoffice.gov.in/PHILATELY_3D.html

मूल्यः ₹ 5.00